

भारत में कुक्कुट उद्योग की स्थिति

प्रलिस के लिये:

[पशुधन कषेतर, पर्यावरण परदूषण, गरीनहाउस गैस उत्सर्जन](#)

मेन्स के लिये:

भारत में मुरगीपालन और कुक्कुट उद्योग की स्थिति, चुनौतियाँ, मुरगीपालन से संबंधित मुद्दे और आगे की राह ।

[स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस](#)

चर्चा में क्यों?

भारत में ब्रायलर चकिन उद्योग पारंपरिक, छोटे पैमाने की कृषिपद्धत से बदलकर एक अत्यधिक संगठित और एकीकृत कृषिव्यवसाय में परिवर्तित हो गया है ।

- इस विकास ने छोटे किसानों को भी वाणज्यिक मुरगीपालन में भाग लेने में सक्षम बनाया है, जिससे उत्पादकता और लाभप्रदता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है ।

ब्रायलर मुरगियाँ क्या हैं?

- ब्रायलर मुरगियाँ: ब्रायलर मुरगियाँ एक प्रकार की मुरगियाँ हैं जिन्हें विशेष रूप से मांस उत्पादन के लिये पाला जाता है । मुरगियों का पालन कुक्कुट उद्योग के अंतर्गत आता है ।
 - लाभ:
 - तीव्र वृद्धिदर: ब्रायलर को आनुवंशिक रूप से इस प्रकार नरिमति किया जाता है कि वे असाधारण तीव्र गति से विकसित होकर अपेक्षाकृत कम अवधि (आमतौर पर 4 से 6 सप्ताह) में वध योग्य वजन तक पहुँच जाते हैं ।
 - मांस-हड्डी अनुपात: इनका चयन बड़े स्तन की मांसपेशियों को विकसित करने के लिये किया गया है, जो उपभोक्ताओं के लिये मुरगियों का सबसे वांछित हिस्सा है ।
 - कुशल फीड परिवर्तन: ब्रायलर कुशलतापूर्वक चारे को मांस में परिवर्तित कर देते हैं, जिससे वे व्यावसायिक उत्पादन के लिये आर्थिक रूप से व्यवहार्य हो जाते हैं ।
- कुक्कुट पालन: कुक्कुट पालन और अंडे के उत्पादन के उद्देश्य से पक्षियों, मुख्य रूप से मुरगियों, बत्तखों, टर्की तथा हंस को पालतू बनाने एवं पालने की प्रथा है । यह दुनिया भर में कृषि कषेतर का एक महत्वपूर्ण घटक है ।

भारत में कुक्कुट उद्योग की स्थिति:

- वैश्विक रैंकिंग और उत्पादन: खाद्य और कृषि संगठन कॉरपोरेट सांख्यिकीय डेटाबेस (FAOSTAT) उत्पादन डेटा (2020) के अनुसार, भारत विश्व में अंडा उत्पादन में तीसरा तथा मांस उत्पादन में 8वें स्थान पर है ।
 - देश में अंडा उत्पादन वित्तीय वर्ष 2014-15 में 78.48 बिलियन से बढ़कर वित्तीय वर्ष 2021-22 में 129.60 बिलियन नग हो गया है । देश में मांस का उत्पादन वित्तीय वर्ष 2014-15 में 6.69 मिलियन टन से बढ़कर वित्तीय वर्ष 2021-22 में 9.29 मिलियन टन हो गया है ।
 - देश में ब्रायलर मांस का उत्पादन सालाना लगभग 5 मिलियन टन (MT) होने का अनुमान है ।
- कुक्कुट चारा उत्पादन: वर्ष 2022 में, भारत का कुल कुक्कुट चारा उत्पादन प्रतिवर्ष 27 मिलियन मीट्रिक टन तक पहुँच गया ।
- विकास का रुझान: भारत में कुक्कुट उद्योग ने प्रभावशाली वृद्धि दिशायी है, जिसमें कुक्कुट मांस उत्पादन 8% की औसत वार्षिक दर से वृद्धि प्रदर्शित कर रहा है और वित्तीय वर्ष 2014-15 तथा वित्तीय वर्ष 2021-22 के बीच अंडे का उत्पादन 7.45% की वृद्धि हुई है ।
- बाजार का आकार और नरियात: भारतीय कुक्कुट बाजार वर्ष 2023 में 2,099.2 बिलियन रुपए तक पहुँच गया और वर्ष 2024 से वर्ष 2032 तक 8.9% की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (CAGR) से वृद्धि का अनुमान है ।

- वृत्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान, भारत ने 64 देशों को कुक्कुट और कुक्कुट उत्पादों का निर्यात किया, जिससे 134 मिलियन अमेरिकी डॉलर का राजस्व प्राप्त हुआ।
- **शीर्ष अंडा उत्पादक राज्य:** आंध्र प्रदेश (20.13%), तमिलनाडु (15.58%), तेलंगाना (12.77%), पश्चिम बंगाल (9.93%) और कर्नाटक (6.51%) हैं।

भारत में पोल्ट्री उद्योग के तेज़ी से विकास के लिये ज़रिमेदार प्रमुख कारक क्या हैं?

- **वर्टकिल इंटिग्रेसन:** कंपनियों अनुबंध कृषि मॉडल का प्रयोग करती हैं, किसानों को एक दिन के चूजे (Day-old chick: DOC), चारा और तकनीकी सहायता प्रदान करती हैं।
 - यह दृष्टिकोण सुव्यवस्थित संचालन, कम जोखिम और प्रजनन से लेकर वपिन तक पूरी आपूर्ति शृंखला पर बेहतर नियंत्रण में सहायता करता है, जिससे निरंतर गुणवत्ता तथा दक्षता सुनिश्चित होती है।
- **तकनीकी उन्नति:** स्वचालित फीडिंग और जलवायु नियंत्रण प्रणालियों के साथ पर्यावरण नियंत्रण (EC) शेड के उपयोग से विकास दक्षता में सुधार हुआ है तथा मृत्यु दर में कमी आई है।
 - इसके अतिरिक्त, उन्नत प्रजनन तकनीकों ने ब्रॉयलर मर्गियों में विकास दर और रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाया है।
- **कुक्कुट/पोल्ट्री उत्पादों की बढ़ती मांग:** शहरी आबादी में वृद्धि और आहार संबंधी प्राथमिकताओं में बदलाव, जिसमें अधिक प्रसंस्कृत तथा खाने के लिये तैयार पोल्ट्री उत्पादों की ओर रुझान शामिल है, ने प्रोटीन स्रोत के रूप में चिकिन की बढ़ती मांग को बढ़ावा दिया है।
- **सरकारी सहायता और नीतियाँ:** परविहन और कोल्ड स्टोरेज के लिये सरकारी पहल, सब्सिडी व बेहतर अवसरचना ने पोल्ट्री क्षेत्र में निवेश एवं विकास को बढ़ावा दिया है, जिससे आपूर्ति शृंखला प्रबंधन में वृद्धि हुई है।
- **किसानों के लिये वृत्तीय प्रोत्साहन:** अनुबंध कृषि मॉडल गारंटीकृत भुगतान एवं प्रदर्शन-आधारित प्रोत्साहन प्रदान करता है, जिससे किसानों के लाभ मार्जिन में वृद्धि होती है और व्यापक संचालन को प्रोत्साहन मिलता है।
 - इसके अतिरिक्त, वृत्तीय संस्थानों से उधार एवं ऋण सुविधाएँ पोल्ट्री फार्मिंग निवेश का समर्थन करती हैं।
- **निर्यात के अवसर:** अंतरराष्ट्रीय बाजारों में कुक्कुट/पोल्ट्री उत्पादों के निर्यात की संभावना भारतीय पोल्ट्री उद्योग के लिये एक गतिशील अवसर प्रस्तुत करती है।
 - हालाँकि यह वैश्विक बाजार की स्थितियों, व्यापार नीतियों और अन्य निर्यातक देशों से प्रतिस्पर्धा से भी प्रभावित होता है।

भारत में कुक्कुट उद्योग से संबंधित चुनौतियाँ क्या हैं?

- **दूषित वातावरण:** बेटरी पजिरों में मर्गियों के उच्च घनत्व वाले मर्गी पालन के परिणामस्वरूप खराब वायु गुणवत्ता, अपशिष्ट प्रबंधन की समस्याएँ और गरीब हाउस गैस उत्सर्जन जैसी स्थिति उत्पन्न होती है।
 - 5,000 से अधिक पक्षियों वाली कुक्कुट इकाइयों को केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) द्वारा प्रदूषणकारी उद्योगों के रूप में वर्गीकृत किया गया है, जिसके लिये सख्त नियामक अनुपालन की आवश्यकता है।
- **फीड मूल्य अस्थिरता:** मकई और सोयाबीन जैसे फीड/चारा अवयवों की कीमतों में उतार-चढ़ाव कुक्कुट पालन की लाभप्रदता को प्रभावित कर सकता है। इस चुनौती का समाधान करने के लिये एक स्थिर आपूर्ति सुनिश्चित करना और वैकल्पिक फीड स्रोतों की खोज करना आवश्यक है।
- **पशुओं के साथ क्रूर व्यवहार:** औद्योगिक कुक्कुट उद्योग संचालन में प्रायः अमानवीय व्यवहार शामिल होते हैं जैसे कि अंग-भंग, भुखमरी और अतिप्रजनन, जो पशु क्रूरता निवारण (PCA) अधिनियम, 1960 का उल्लंघन करते हैं।
- **वृत्तीय और पर्यावरण संबंधी चुनौतियाँ:** उद्योग को बड़े ऋण, अनौपचारिक सुविधाओं पर निर्भरता और जटिल अनुबंध कृषि व्यवस्था जैसे मुद्दों का सामना करना पड़ता है। बाजार की अस्थिरता और उद्योग के भागीदारों के दबाव के कारण किसानों को प्रायः काफी नुकसान उठाना पड़ता है।
- **अन्य प्रोटीन स्रोतों से प्रतिस्पर्धा:** कुक्कुट बाजार को वनस्पति आधारित प्रोटीन जैसे अन्य प्रोटीन स्रोतों से प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है, जो स्वास्थ्य एवं पर्यावरण संबंधी चिंताओं के कारण लोकप्रिय हो रहे हैं।
- **आपूर्ति शृंखला की अक्षमताएँ:** परविहन, कोल्ड स्टोरेज और वितरण नेटवर्क सहित आपूर्ति शृंखला में अपर्याप्तता, बर्बादी का कारण बन सकती है तथा पोल्ट्री उत्पादों की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकती है, जिससे बाजार की वृद्धि में बाधा आ सकती है।
- **अपशिष्ट प्रबंधन के मुद्दे:** कुक्कुट उद्योग मीथेन, CO₂, जल अपशिष्ट और ठोस अपशिष्ट सहित महत्वपूर्ण अपशिष्ट उत्पन्न करता है, जिससे मृदा एवं जल प्रदूषण होता है।
 - अत्यधिक खाद का संचय भूमि की क्षमता से अधिक हो जाता है, जिससे प्रदूषण बढ़ता है और मकखियों तथा मच्छरों जैसे रोगवाहकों के लिये प्रजनन स्थल बनते हैं।

भारत में पोल्ट्री उद्योग की पहल क्या हैं?

- **पोल्ट्री वेंचर कैपिटल फंड (PVCF):** पशुपालन और डेयरी विभाग राष्ट्रीय पशुधन मशिन के "उद्यमिता विकास तथा रोजगार सृजन" (EDEG) के तहत इसे कार्यान्वित कर रहा है।
- **राष्ट्रीय पशुधन मशिन (NLM):** NLM के तहत विभिन्न कार्यक्रम जिसमें ग्रामीण बैकयार्ड पोल्ट्री डेवलपमेंट (RBPD) और इन्वेटिवि पोल्ट्री प्रोडक्टिविटी प्रोजेक्ट (IPPP) को लागू करने के लिये राज्यों तथा केंद्रशासित प्रदेशों को वृत्तीय सहायता प्रदान की जाती है।
- **पशु रोगों के नियंत्रण के लिये राज्यों को सहायता (ASCAD) योजना:** "पशुधन स्वास्थ्य और रोग नियंत्रण" (Livestock Health and Disease Control-LH&DC) के तहत ASCAD, जिसमें आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण पोल्ट्री रोगों जैसे रानीखेत रोग, संक्रामक बर्सल रोग, फाउल पॉक्स आदि के टीकाकरण को शामिल किया गया है, जिसमें एचयिन इन्फ्लूएंज़ा जैसे आकस्मिक तथा वृद्धि रोगों के नियंत्रण और रोकथाम भी शामिल है।

आगे की राह

- व्यावसायिक वातावरण को बेहतर बनाना: कुक्कुट उत्पाद नरियात से संबंधित चुनौतियों का समाधान करके और अनौपचारिक क्षेत्र की इकाइयों को एकीकृत करके कारोबार को आसान बनाना।
- अनुसंधान एवं विकास में नविश करना: कुक्कुट क्षेत्र में नवाचार और प्रगति को बढ़ावा देने के लिये अनुसंधान एवं विकास में नविश बढ़ाना।
- पर्यावरणीय नगरानी को मज़बूत करना: कड़े पर्यावरणीय नियमों को लागू करना, विशेष रूप से CPCB द्वारा कुक्कुट उद्योग को अत्यधिक प्रदूषणकारी 'ऑरेंज श्रेणी' क्षेत्र के रूप में पुनर्वर्गीकृत करने के आलोक में।
 - यह वर्तमान चुनौतियों, जैसे **बरड फलू संकट** से निपटने तथा व्यापक जलवायु आपातकाल को कम करने के लिये महत्त्वपूर्ण है।
- पर्यावरण और पशु कल्याण विनियमों को संरेखित करना: सुनिश्चित करना कि भारत के पर्यावरण कानून और विनियमन सार्वजनिक स्वास्थ्य संकटों से सीखे गए सबक को एकीकृत करते हुए **वन हेल्थ सदिधांत** को प्रतबिंबित करें।
 - पशु कल्याण, सार्वजनिक स्वास्थ्य, पारिस्थितिकी तंत्र अखंडता और जैवविविधता संरक्षण के बीच संबंध पर ज़ोर देना।
- सामाजिक जागरूकता अभियान: सरकार को "सामाजिक जागरूकता अभियान" के माध्यम से जागरूकता उत्पन्न करने के लिये धनराशि निर्धारित करना चाहिये, जिससे **मुरगीपालन/पोल्ट्री फार्मिंग** से संबंधित प्रमुख पहलुओं पर समुदायों और आबादी को संवेदनशील बनाया जा सके।

दृष्टि मैनस प्रश्न:

प्रश्न. भारत में मुरगीपालन की स्थिति क्या है? इसकी चुनौतियाँ क्या हैं और आगे का रास्ता क्या है?

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न 1. नमिनलखिति में से कौन-सी 'मशिरति खेती' की प्रमुख वशिषता है? (2012)

- (a) नकदी और खाद्य दोनों सस्यो की साथ-साथ खेती
- (b) दो या दो से अधिक सस्यो को एक ही खेत में उगाना
- (c) पशुपालन और सस्य उत्पादन को एक साथ करना
- (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर: (c)

??????????:

प्रश्न 2. ग्रामीण क्षेत्रों में कृषीतर रोज़गार और आय का प्रबंध करने में पशुधन पालन की बड़ी संभाव्यता है। भारत में इस क्षेत्रक की प्रोन्नति करने के उपयुक्त उपाय सुझाते हुए चर्चा कीजिये। (2015)